८. आदर्श शासक

स्वराज्य की स्थापना होने से पूर्व महाराष्ट्र पर आदिलशाही, सिद्दी, पुर्तगाली और मुगल सत्ताओं का प्रभाव था । शिवाजी महाराज ने इन सत्ताओं के विरुद्ध संघर्ष किया । सभी प्रतिकूल परिस्थितियों का उन्होंने सामना किया और स्वतंत्र तथा प्रभुता संपन्न स्वराज्य की स्थापना की । उन्होंने स्वराज्य के प्रशासन को व्यवस्थित रूप दिया और स्वराज्य को सुराज्य में परिवर्तित किया । शिवाजी महाराज ने अपनी वीरता और कार्य से नई व्यवस्था का ही निर्माण किया । स्वराज्य की स्थापना करने के कार्य में संघर्ष करते हुए उन्होंने स्वयं कई बार खतरे उठाए। अफजल खान से मिलने जाने की घटना हो अथवा पन्हाला गढ़ का घेरा, शाइस्ता खान पर किया गया धावा हो अथवा आगरा से छूटकर आना; ये सभी घटनाएँ खतरों से परिपूर्ण थीं । शिवाजी महाराज ने इन सभी घटनाओं पर सफलतापूर्वक विजय पाई और इनमें से वे सकुशल निकल आए ।

विचार करो

शिवाजी महाराज पर प्राण निछावर करनेवाले साथी-सहयोगी थे । इसीलिए वे स्वराज्य का निर्माण कर सके ।

विभिन्न भाषाओं में मित्रता का महत्व बताने वाले अनेक मुहावरे और कहावतें पाई जाती हैं । उन्हें ढूँढ़ो । जैसे- A Friend in need is a friend indeed.

संगठन कौशल : शिवाजी महाराज ने स्वराज्य अभियान के लिए अपने आसपास के लोगों को प्रेरित किया । उनके पास विलक्षण संगठन कौशल था । इसी कौशल के बल पर उन्होंने वीर और प्राण निछावर करने वाले लोगों को इकट्ठा किया । स्वराज्य के अभियान में उनके इन्हीं सहयोगियों ने अपने प्राणों की परवाह न करते अपने कर्तव्यों का निर्वाह किया । अफजल खान के साथ हुई भेंट की घटना में अति विकट क्षण में बड़ा सईद को मौत के घाट उतारने वाला जिवा महाला, पन्हाला गढ़ का घेरा तोड़कर जाते समय शिवाजी महाराज की भूमिका निभाने वाला शिवा काशिद, विशालगढ़ की ओर बढ़ते जा रहे शिवाजी महाराज का पीछा करने वाले शत्रु का रास्ता रोकने वाला बाजीप्रभु देशपांडे, पुरंदर किले के लिए युद्ध करने वाला मुरारबाजी देशपांडे, सिंहगढ़ को जीतने के लिए वीरगति पाने वाला तानाजी मालुसरे, आगरा से छूटकर निकल आने की घटना में बहुत बड़ा खतरा उठाने वाला हीरोजी फरजंद और मदारी मेहतर आदि अनेक लोगों के उदाहरण स्वराज्य निर्माण के अभियान में पाए जाते हैं । शिवाजी महाराज अपने सहयोगियों का बहुत ध्यान रखते थे । जैसे- स्वराज्य स्थापना के कार्य में कान्होजी जेधे उनके साथ आरंभिक समय से थे । वृद्धावस्था में वे बीमार हुए । उस समय शिवाजी महाराज ने उनसे कहा, 'उपचार करवाने में किसी भी प्रकार की लापरवाही न करें ।'

प्रजा के प्रति जागरूकता : स्वराज्य स्थापना के कार्य में शिवाजी महाराज का शत्रुओं के साथ संघर्ष चल रहा था । शत्रुओं के आक्रमणों से प्रजा त्रस्त हो जाती थी। उस समय वे अपनी प्रजा का अधिकाधिक ध्यान रखने का प्रयास करते । शाइस्ता खान पर धावा बोलते समय उन्होंने रोहिड़ घाटी के देशमुख को प्रजा के प्रति अपने कर्तव्य पूर्ण करने हेतु चेतावनी दी थी । उन्होंने देशमुख से कहा कि वह गाँव-गाँव घूमकर लोगों को घाट के नीचे सुरक्षित स्थान पर जाने के लिए कहें । उन्होंने कड़े शब्दों में कहा कि 'इस कार्य में एक क्षण की भी देरी नहीं होनी चाहिए ।' आगे वे यह भी चेतावनी देते हैं, ''यदि प्रजा का ध्यान रखा नहीं गया तो मुगल सेना आएगी, लोगों को बंदी बनाएगी और वह पाप तुम्हारे सिर पर होगा ।'' शिवाजी महाराज इस बात का भी ध्यान रखते थे कि उनके सैनिकों से प्रजा को कोई कष्ट न पहुँचे ।

सेना विषयक नीति : शिवाजी महाराज की सेना में कठोर अनुशासन था । वे इस बात का ध्यान रखते थे कि सैनिकों को निश्चित समय पर वेतन मिले । उन्होंने सैनिकों को नकद वेतन देने का प्रबंध किया । मध्यकालीन भारत में अनेक राज्यशासनों और अन्य क्षेत्रों में सैनिकों को नकद वेतन के बदले जागीर देने की पद्धति थी । शिवाजी महाराज ने इस पद्धति को रद्द कर दिया । जब शत्रु प्रदेश में उनके अभियान चलाए जाते तो सेना को चेतावनी दी जाती कि इस अभियान में उन्हें जो कुछ मिलेगा; वह सरकारी कोष में जमा करें । अभियान में वीरता और पराक्रम दिखाने वाले सैनिकों को सम्मानित किया जाता । युद्ध में जो सैनिक वीरगति प्राप्त करते; उनके परिवार के भरण-पोषण का वे ध्यान रखते । युद्ध में शरण आए हुए शत्रु सैनिकों अथवा बंदी सैनिकों के साथ सद्व्यवहार करते ।

क्या तुम जानते हो ?

फसल की बोआई, सिंचाई और फसल के पकने की अवधि में यदि युद्ध शुरू हो जाता है तो किसान की दुरावस्था का वारा-पारा नहीं रह जाता । बोआई के काम में सैनिकों की गतिविधियाँ आड़े आ ही जातीं । सैनिक कई बार खड़ी फसल भी काट ले जाते अथवा नष्ट कर देते । किसानों के मकान लूटते । शिवाजी महाराज ने अपने अधिकारियों को आदेश दे रखा था कि वे अपने सैनिकों को ऐसी हरकतों से दूर रखें। इस संदर्भ में ई.स.१६७४ में छत्रपति शिवाजी महाराज का अपने सेना अधिकारियों को उद्देश्य कर लिखा पत्र बहुत महत्त्व रखता है । शिवाजी महाराज ने सेना के अनुशासन के विषय में कितनी सूक्ष्मता से विचार किया था; इसकी कल्पना इन वाक्यों से हो जाती है ।

''यदि प्रजा को कष्ट पहुँचाने लगोगे तो इस स्थिति में लोग कहाँ जाएँगे ? कोई किसान का अनाज हठात ले आएगा तो कोई रोटी छीन ले जाएगा । कोई घास-फूस तो कोई साग-सब्जी ले जाएगा । ऐसा होने लगा तो जो किसान अपने प्राणों के भय से किसी तरह रहते हैं, वे भी घर छोड़कर जाने लगेंगे । अनगिनत लोगों पर भूखों मरने की नौबत आएगी । यह तो वही होगा कि लूटने आए थे मुगल और उससे अधिक तुमने ही उन्हें लूटा । ऐसा शाप मिलेगा ।''

सहिष्णु आचरण : शिवाजी महाराज को आदिलशाह, मुगल और सिद्दी जैसे शत्रुओं से संघर्ष करना पड़ा । ये इस्लामी सत्ताएँ थीं । उनके साथ युद्ध करते समय शिवाजी महाराज ने स्वराज्य में रहने वाले मुस्लिमों को अपना प्रजाजन माना । अफजल खान से भेंट करते समय उनके सैनिकों में सिद्दी इब्राहीम नाम का विश्वसनीय सेवक था । सिद्दी हिलाल शिवाजी महाराज की सेना का सरदार था और दौलत खान स्वराज्य की नौसेना का महत्त्वपूर्ण अधिकारी था ।

शिवाजी महाराज की धार्मिक नीति सहिष्णु थी। शत्रु के किसी प्रदेश को जीतने पर; उस प्रदेश में मुस्लिम धार्मिक स्थानों को मिलने वाली सुविधाएँ; वे वैसी ही जारी रखते । उनके सहिष्णुतापूर्ण धार्मिक नीति के संबंध में इतिहासकार खाफी खान लिखता है, 'शिवाजी महाराज ने अपने सैनिकों के लिए कड़ा नियम बनाया था कि अभियान में किसी भी मस्जिद को क्षति नहीं पहुँचाएँगे । कुरआन की प्रति हाथ लगने पर उसे श्रद्धा भाव से किसी मुस्लिम व्यक्ति को सौंप देंगे ।'

स्वतंत्रता की प्रेरणा : शिवाजी महाराज ने स्वराज्य स्थापना के लिए जो प्रयास किए; उन प्रयासों का अपना अलग मूल्य है और वह मूल्य स्वतंत्रता का मूल्य है । इस मूल्य का उद्देश्य किसी अन्य सत्ता के प्रभुत्व को स्वीकार न करते हुए अपना स्वतंत्र और प्रभुता संपन्न अस्तित्व बनाए रखना है । विदेशी और अन्यायी सत्ताओं से संघर्ष करते हुए शिवाजी महाराज ने दूसरों को भी स्वतंत्रता की प्रेरणा दी । मुगलों की सेवा में रत छत्रसाल जब शिवाजी महाराज से मिला तब उन्होंने उसे बुंदेलखंड में स्वतंत्र राज्य निर्माण करने की प्रेरणा दी ।

शिवाजी महाराज के कार्यों की महानता : शिवाजी महाराज ने अनेक शत्रुओं के साथ संघर्ष

करते हुए स्वराज्य की स्थापना की । उनका यह कार्य उनके युगप्रवर्तकत्व को सिद्ध करता है। इस कार्य के अतिरिक्त उनके व्यक्तित्व में अन्य दूसरे अनेक सद्‌गुणों का कोश भी पाया जाता है ।

शिवाजी महाराज अत्यंत बुद्धिमान थे । उन्होंने अनेक विद्याएँ आत्मसात की थीं । उन्हें कई भाषाएँ और लिपियाँ अवगत थीं । माता-पिता द्‌वारा किए गए स्वराज्य स्थापना और नैतिकता के संस्कार उनके मन की गहराई में जड़ जमाए हुए थे । उनके व्यक्तित्व में चारित्र्य और बल, शील और वीरता का सुंदर समन्वय हुआ था । उनमें नेतृत्व, प्रबंधन, दूरदर्शिता, राजनीतिक कूटता, नागरिक और सैनिकी प्रशासन से संबंधित नीति, सत्य और न्याय के प्रति निष्ठा, सभी के साथ समान व्यवहार करने की प्रवृत्ति, आगामी बातों का ढाँचा बनाने का नियोजन, नियोजित बातों को पूर्ण करने का कौशल, संकट में अडिग रहते हुए ऊपर उठने का निश्चय, सदैव जागरूक रहने की सजगता आदि असंख्य गुण थे ।

स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार करनेवाले को वे कठोर दंड देते । प्रजा के किसान, कारीगर, सैनिक, व्यापारी जैसे सभी वर्गों का वे ध्यान रखते । अपने धर्म के लोगों की भाँति वे अन्य धर्मों के लोगों के प्रति भेदभाव न करते हुए उनका आदर करते थे । दूसरे धर्म में चले गए लोगों को पुन: अपने धर्म में स्वीकार करने का जिस समय में कड़ा विरोध किया जाता था; उस समय उन्होंने धर्मांतरित लोगों को अपने धर्म में लिया । समय पड़ने पर उनसे स्वयं का रिश्ता जोड़ा । धार्मिक कारणों से समुद्री यात्रा को विरोध किया जाता था; ऐसे समय उन्होंने सिंधुदुर्ग जैसे जलदुर्ग का निर्माण करवाया और नौसेना का गठन किया । इसका अर्थ यह होता है कि समुद्री मार्ग द्‌वारा होने वाले बाहरी आक्रमणों से वे परिचित थे और उसका उपाय भी उन्होंने सोच रखा था। वे राज्याभिषेक करवाकर स्वराज्य के विधिवत नरेश बने। इस राज्याभिषेक के पश्चात उन्होंने धार्मिक दृष्टि से भिन्न विधि द्‌वारा दूसरा राज्याभिषेक करवाया। उनके ये सभी कार्य धार्मिक क्षेत्र में उनके द्‌वारा की गई क्रांतिकारिता को दर्शाते हैं ।

जब-जब स्वराज्य पर प्राणघाती संकट आए; तब-तब सहयोगियों के बदले अथवा उनके साथ स्वराज्य के लिए वे अपने प्राण अर्पित करने के लिए तत्पर रहते थे । परंतु उनकी महानता केवल ऐसे विकट संकटों का धैर्य और निर्भीकता से सामना करने तक सीमित नहीं थी बल्कि वे नैतिकता और गुणवत्ता को स्वराज्य की आधारशिला बनाना चाहते थे । अत: महत्त्वपूर्ण बातों की तरह छोटी-छोटी बातों के बारे में भी उन्होंने संबंधित व्यक्तियों को आवश्यक वे उचित आदेश दे रखे थे । सैनिक किसान के खेत से सब्जी भी जबरदस्ती नहीं ले सकते; इस प्रकार का आदेश इस दृष्टि से आदर्श ही है । पेड़ काटने पर लगाए गए प्रतिबंध भी अपना महत्त्व दर्शाते हैं ।

विचार करो

वृक्षों का संवर्धन करना क्यों आवश्यक है?

किले का कूड़ा-कचरा यहाँ-वहाँ, कहीं भी नहीं फेंकना चाहिए । उसे मकान के पिछवाड़ेवाले बगीचे अथवा क्यारियों में जलाएँ और उसकी राख पर सब्जी उगाएँ, यह उनका आदेश था । इससे यह स्पष्ट होता है कि स्वराज्य का निर्माण करते समय वे छोटी-छोटी बातों की ओर कितना ध्यान देते थे । वे केवल योद्‌धा ही नहीं थे अपितु एक नवीन, स्वतंत्र, नीतिवान और सुसंस्कृत समाज का निर्माण करने वाले शिल्पकार थे । उनकी महानता सर्वांगीण है ।

बताओ तो

- तुम्हारे परिसर के कूड़े-कचरे का निपटारा किस प्रकार होता है?
- कूड़े-कचरे का निपटारा करने वाली व्यवस्था का नाम बताओ।

हमारे राष्ट्रीय आंदोलन में शिवाजी महाराज महान प्रेरणा स्थान थे । महात्मा जोतीराव फुले ने

क्या तुम जानते हो ?

महात्मा जोतीराव फुले ने ई. स. १८६९ में छत्रपति शिवाजी महाराज पर एक पोवाड़ा रचा । उसका कुछ अंश यहाँ दिया गया है ।

।। शिवाचा गजर जयनामाचा झेंडा रोविला ।।
।। क्षेत्र्याचा मेळा मावळ्याचा शिकार खेळला ।।
माते पायीं ठेवी डोई गर्व नाहीं काडीचा ।
आशिर्वाद घेई आईचा ।।
आलाबला घेई आवडता होतो जिजीचा ।
पवाडा गातो शिवाजीचा ।।
कुळवाडी - भूषण पवाडा गातो भोसल्याचा ।
छत्रपती शिवाजीचा ।।३।।

समता के संघर्ष में पोवाड़ा द्वारा शिवाजी महाराज की महानता का बखान किया है ।

लोकमान्य तिलक ने शिवजयंती उत्सव के माध्यम से राष्ट्रीय जागृति की । लाला लजपतराय ने शिवाजी महाराज की महत्ता पर एक पुस्तक लिखी है । तमिल काव्य के पितामह सुब्रमण्यम भारती ने शिवाजी महाराज अपने सहयोगियों को संबोधित कर रहे हैं; इस प्रसंग की कल्पना कर काव्य रचना की है । विश्वकवि रवींद्रनाथ ठाकुर ने शिवाजी महाराज पर एक दीर्घ कविता लिखी है । वे शिवाजी महाराज द्वारा किए गए स्वराज्य साधना के प्रयासों की ओर 'महान लक्ष्य साधना के प्रयास' के रूप में देखते हैं । सर जदुनाथ सरकार ने 'शिवाजी एंड हीज टाइम्स' ग्रंथ में छत्रपति शिवाजी महाराज के कार्यों का गौरव किया है । पं. जवाहरलाल नेहरू ने शिवाजी महाराज के विषय में कहा है, 'शिवाजी महाराज केवल महाराष्ट्र के नहीं थे अपितु वे संपूर्ण देश के थे । ... उन्हें अपने देश से बहुत प्रेम था और मानवीय सद्‌गुणों के वे जीवंत प्रतीक थे ।' भारत की सभी भाषाओं में शिवाजी महाराज से प्रेरणा और आदर्श ग्रहण करनेवाला साहित्य लिखा गया है ।

शिवाजी महाराज के स्वराज्य कार्य की और स्वराज्य को सुराज्य में परिवर्तित करने की यह प्रेरणा भावी पीढ़ियों के लिए आदर्श बनी रहेगी । शिवाजी महाराज महान राष्ट्रपुरुष थे ।

स्वाध्याय

१. पाठ में ढूँढ़कर लिखो :

(१) शिवाजी महाराज के जीवन में खतरे उठाने वाले प्रसंग कौन-से थे ?

(२) शिवाजी महाराज के आगरा से निकल आने के प्रसंग में खतरा उठाने वाले कौन थे ?

(३) शिवाजी महाराज ने रोहिड़ घाटी के देशमुख को क्या चेतावनी दी ?

(४) शिवाजी महाराज की कौन-सी प्रेरणा भावी पीढ़ियों के लिए आदर्श बनी रहेगी ?

२. लेखन करो :

(१) प्रजा को क्षति न पहुँचे; इसके लिए शिवाजी महाराज ने सैनिकों को कौन-सी चेतावनी दे रखी थी ?

(२) शिवाजी महाराज की धार्मिक नीति सहिष्णु थी; यह किस घटना से दिखाई देता है ?

(३) शिवाजी महाराज की सेना विषयक नीति स्पष्ट करो ।

३. एक शब्द में लिखो :

(१) स्वराज्य की नौसेना का महत्त्वपूर्ण अधिकारी -

(२) शिवाजी महाराज पर काव्य रचना करने वाला तमिल कवि -

(३) बुंदेलखंड में स्वतंत्र राज्य का निर्माण करने वाला -

(४) शिवाजी महाराज की महत्ता पोवाडा द्वारा बताने वाले -

उपक्रम

(१) संकट के समय में मित्र को की गई सहायता का वर्णन कक्षा में करो ।

(२) व्यक्ति के नाम पर जो गाँव, शहर पाए जाते हैं; उनके नामों की सूची बनाइए ।